सूफीमत की उत्पत्ति संबंधी अवधारणायें : एक अध्ययन

उमेश कुमार

इतिहास प्राध्यापक

रा0व0मा0वि0 जसराना सोनीपत

शोध सारः– जिस प्रकार मध्यकालीन भारत में हिन्दुओं में भक्ति आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, उसी प्रकार मुसलमानों में प्रेम–भक्ति के आधार पर सूफीवाद का उदय हुआ । मध्यकालीन भारत में सूफीमत एक प्रभावशाली आन्दोलन के रूप में उभरा । यद्यपि सूफीमत इस्लाम से ही संबंधित था किन्तु यह इस्लाम में आई कट्टरता के विरूद्ध था । सूफी बहुत ही खुले विचारों वाले थे । उन्होंने रूढिवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा दी गई कुरान एवं सुन्ना की बौद्धिक व्याख्या की कटु आलोचना की । उन्होंने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की । सूफी शब्द की उत्पत्ति कहां से हुई, इस विषय पर विद्वानों में विभिन्न मत हैं ।

मुख्य शब्द–सफा,उत्पत्ति, सम्प्रदाय, फना, तसव्वुफ, दर्शन, चिन्तन, कर्मकाण्ड, पवित्र

सूफी शब्द की उत्पत्ति– जब सूफियों का जिक्र उठता है तब आंखों के सामने सफेद चोगे मे हाथ फैलाये घूमते लोगों का चित्र उभर आता है लेकिन यह मात्र सूफियों का परिचय नहीं । इसके अलावा सुफियों का और भी परिचय है । सूफी शब्द जितना विस्तृत है उतना रहस्यमय भी [1]। सहल कुब्न आदिल्लाह अल तस्तरी का विचार है –'जो व्यक्ति पाप से दूर रहता है, ईश्वर चिन्तन में सदैव तल्लीन रहता है, ईश्वर के लिए संसार से अलग रहता है और जिसकी दृष्टि में कीचड और कंचन समान है, वह सूफी है [2]।

सूफी मत के बारे में सूफी शब्द की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों की अलग–अलग धारणा है । अली हुजवेरी सूफी शब्द की उत्पत्ति सफा शब्द से मानते हैं [3]। इस विचारधारा को मानने वालों के अनुसार सूफी अपने मन को सांसारिक मोह–माया, छल–कपट और बाह्य आडम्बरों से स्वयं को दूर रखता था और अपनी इन्द्रियों को वश में रखता था । सूफी का विश्वास है कि परमात्मा की छाया मन में दर्पण पर तभी पडेगी, जब वह मन को सांसारिकता से दूर रखेगा ।

श्री ए0 जे0 अरबेरी ने इस कथन का समर्थन करते हुए कहा है 'तसव्वुफ' की निश्पत्ति अलकुशैरी के अनुसार –**'सफा'** शब्द से हुई है जिसका अर्थ शुद्ध होना है और इनका संबंध सूफ वस्त्र से नहीं है [4]।

सूफीमत की उत्पत्ति और विकास–सूफीमत इस्लामी दर्शन का उत्तरवादी संस्करण है जो इस्लाम की कट्टरपंथी कुरान समर्पित मान्यताओं के विरोध स्वरूप अरब में प्रवर्तित हुआ किन्तु फारस में जाकर विकसित हुआ । राजाश्रय में इसे समय–समय पर कुरान की मान्यताओं का स्वीकार करने के लिए होना पडा एवं कालान्तर में जैसे अन्य धर्म, संस्कृति तथा दर्शन से सम्पर्क बढा इसने उदारता से उनसे समन्वय स्थापित किया और अपने सिद्धान्तों में परिवर्तन कर लोकप्रियता प्राप्त की [5]।

सूफीमत का आरम्भ मुहम्मद साहब हिजरत सन् 623 ई0 से माना जाता है । प्रारम्भ में सूफीमत मात्र एक इस्लामी प्रवृति मूलक धर्म माना जाता था । सूफीमत के आरम्भ में से इस्लाम के प्रधान अंग के रूप में स्वीकार किया गया है किन्तु इस दिशा में यह ध्यान रखना होगा कि–'सूफीमत इस्लाम धर्म की शरीयत कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया का उसी प्रकार फल है जिस प्रकार हिन्दू धर्म साधना में वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया का फल वैष्वमत है [6]।

'सूफीमत' मनुष्य के मस्तिष्क को समझने की गवेत्रणा है । एक प्रकार से यह दर्शन से उच्च भूमिका पर स्थित है । सूफी तदन्तर विश्वास और प्रेम के पंखों पर उडकर प्रियतम का सानिध्य प्राप्त करता है [7]।

वस्तुतः प्रत्येक धर्म किसी न किसी अंग में रहस्य भावना निहित होती है । हिन्दी में इसे सूफीमत तथा अरबी में 'तसव्वुफ' कहते हैं । सूफी को सालिक भी कहते हैं जिसका अर्थ अध्यात्मिक पथ की ओर अग्रसर होने से लगाया जाता है । सूफीमत का मानने वाला ईश्वर का ही एक अंग है । वह प्रेम मार्ग में विश्वास रखता है । वह न पूजा करता है न सत्कार करता है बल्कि वह प्रेम में सराबोर होकर उस पर भक्ति का सानिध्य पाकर उसका दीदार करना चाहता है । सूफीमत वास्तव में आर्य जाति के धार्मिक विकास के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ जबकि कुछ लोगों ने इसके अविर्भाव को सेमिटिक धर्म की विजय के विरूद्ध आर्यों की प्रतिक्रिया माना है । कुछ लोगों ने यह भी कहा है कि सूफीमत वास्तव में हिन्दुओं के वेदान्त का इस्लामी संस्करण है [8]।

सूफीमत का क्रमिक विकास

1. **सूफीमत की उत्पत्ति कुरान से**–सूफीमत की उत्पत्ति के विषय मे विद्वानों के विभिन्न मत एवं सिद्धान्त हैं । इन विषयों पर भी विद्वान एकमत नहीं हैं । कुछ विद्वान सूफीममत का स्रोत कुरान को मानते हैं जिसमें कुछ सूफी संतों ने कुरान की कुछ आयतें भी प्रस्तुत की हैं । चन्द्रबली पाण्डेय भी इस मत का समर्थन करते हुए कहते हैं कि सूफीमत के उदभव को लेकर जो मतभेद पडे हैं उनके मूल में इस तथ्य की अवहेलना ही दिखाई देती है कि लोग उसके समीक्षकों में सर्वप्रथम उसकी भावना सहजवासना और मूल संस्कारों पर ध्यान नहीं देते ।

   उपर्युक्त तथ्यों पर ध्यान देते हुए भी पाण्डेय जी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि सूफीमत के उदभव के लिए हमें सभी जातियों की आदिम प्रवृत्तियों को ही ढठना है अन्यत्र कदापि नहीं [9]।

   कुछ सूफियों के विचार से सूफीमत का आरम्भ में बीलवपन, नृहं में अंकुर, इब्राहिम में कली मूसा में विकास, मसीह में परिपाक एवं मधु का फलागम हुआ [10]।

   अन्य मतावलम्बी निदान, निकल्सन तथा ब्राउन सादृश मर्मज्ञों ने सूफीमत का मूल–स्रोत कुरान में माना है [11]।

   कुरान के कुछ स्थल सूफियों के सर्वथा अनुकूल हैं । ये अपने विचारों का मूल स्रोत कुरान से मानते हैं । इनकी हिदायतें अमान्य नहीं की जा सकती । कुरान में एक स्थान पर कहा गया है कि अल्लाह ने अपने दूत या देवदूत हजरत मुहम्मद के जरिये सृष्टि का रहस्य खोला । मनुष्य को जीवन शैली और रहन–सहन की पद्धति बताई, उन्हीं मनुष्य को पूर्ण मानव बनने का मार्ग चेताया है ।

   अधिकांश सूफियों ने मुहम्मद साहब को सूफीमत का आदि उपदेशक तथा कुरान को सूफीमत का आदि ग्रन्थ माना । जलालुद्दीन रूमी ने एक स्थान पर लिखा है–कुरान का सार तत्व हमने सूफियों

ने ले लिया है और निस्सार वस्तुओं को कुत्तों के लिए फैंक दिया अर्थात् सूफियों ने कुरान के अमूल्य उपदेशों को ग्रहण कर लिया और व्यर्थ के आडम्बर पाखण्ड और बाहरी कर्मकाण्ड को त्याग दिया । मुहम्मद साहब के जीवन और व्यवहार में कहीं–कहीं पर सूफियों के लक्षण थे । वे उन्हीं की भांति सादगी और विलासिता रहित जीवन व्यतीत करते थे । हेरा की गुफा में मुहम्मद साहब की साधना पद्धति सूफियाना ढंग की ही थी ।

2. **सूफीमत की उत्पत्ति नव–अफलातूनी विचारधारा से हुई–** इस विचार के समर्थक प्रो0 ब्राउन तथा डॉ0 निकोल्सन हैं । नव अफलातूनी दर्शन एक अध्यात्मिक दर्शन है जिसका प्रवर्तक प्लेटो को माना जाता है । इनकी विचारधारा इनके शिष्यों स्पेनीसिमरस, जेनैनोक्रेटीज के बाद दम तोडने लगी । नव अफलातूनी दर्शन की नींव बाद में फलातम्बूस ने डाली । इस विचारधारा में अफलातून और पैथागोरस के सिद्धान्तों तथा विचारों का समन्वय किया गया है । इसमें कुछ भारतीय सिद्धान्तों और विचारों का मिश्रण भी मिलता है ।

नव अफलातूनी दर्शन, तर्क और बुद्धि के द्वारा चरम लक्ष्य की प्राप्ति को असंभव मानता है । उसका मानना है कि इस मत के अनुसार मानव ईश्वर के साथ एक्य स्थापित नहीं कर सकता किन्तु सूफियों ने इसके विरूद्ध कहा है कि 'ईश्वर द्वारा परमात्मा से रागात्मक संबंध स्थापित किया जा सकता है ।' सूफीमत इस विचारधारा से विशेष रूप से प्रभावित है ।

सूफीमत का जन्म और विकास पूर्वी मस्तिष्क की देन है । नव अफलातूनी दर्शन का जन्मदाता 'प्लोटिनस' तथा जिसने प्लेटो और अरस्तु के सिद्धान्त का पूर्णरूप से अध्ययन करके उनका भारतीय दर्शन से सामंजस्य स्थापित करते हुए 'नव अफलातूनी' दर्शन को जन्म दिया । इस तरह नव अफलातूनी यह मत का भारतीय विचारधारा से बहुत साम्य है । यह अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय दर्शन का ही प्रभाव माना जाना चाहिए [12]।

अफलातूनी दर्शन में अद्वैतवाद पर बल दिया गया जो सूफीमत का प्राण है । नव अफलातूनी दर्शन में आत्मा को अमरता प्राप्त है । वह न पैदा होती है न मरती है [13]।

सूफीमत में आत्मा और परमात्मा के विषय मे जो विचार प्रस्तुत किये गए हैं वे नव अफलातूनी दर्शन के विचारों से मिलते –जुलते हैं । सूफीमत में नव अफलातूनी दर्शन से ईश्वर प्रेम को ग्रहण किया गया है । ईश्वर प्रेम सूफीमत का आधार है ।

3. **सूफीमत और ईसायत :–**यूरोप के कुछ विद्वानों का कहना है कि ईसाइयत के सान्यासिक जीवन, उपवास, पूजा, अन्तः शुद्धि, विकारों के लिए अनेक प्रकार की कष्टकारी शारीरिक सकाधन, प्रार्थना–विधि आदि से इस्लाम धर्म ही नहीं सूफीमत भी प्रभावित हुआ और सूफियों ने इनके जीवन के सात्विक जीवन को ग्रहण कर लिया जिससे ईसाइयों को तापस जीवन ग्रहण करने वाले लोगों का आपस मे सम्पर्क स्थापित हो गया । ईस्लाम धर्म पर भले ही ईसाइयत का प्रभाव पडा हो, परन्तु ये प्रभाव ईसाइयत के स्वयं के नही थे क्योंकि वह स्वयं नास्तिक मत, नव अफलातूनी विचारधारा बौद्ध धर्म तथा सन्यासियों से प्रभावित हो चुका था । सूफीमत की उत्पत्ति और उसक विकास में ईसाइयत के योगदान को मानने वालों में माग्रेट, श्री अल्फ्रेड व्रेमर, इम्नोज गोल्ड जहर, डिकर ब्लैक मेकडोनाल्ड के नाम उल्लेखनीय हैं ।

इन सभी का मानना है सन्यासी जीवन और सात्विक जीवन बिताना बाइबल की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है और ये गुण सूफीमत ने ईसाइयत से ग्रहण किए हैं । 'फ्रांसीसी विद्वान ब्रेमर कहते हैं कि इस्लामी तसव्वुफ में जिन बातों का समावेश है, वे इस्लाम धर्म के पूर्व देश में प्रचलित थी और इस्लाम से पहले के अरबों पर ईसाई लोगों का बहुत प्रभाव पडा था और इन्हीं ईसाइयों के कारण अरबों में इस प्रकार का व्यवहार प्रचलित हुआ [13]। इन्हीं का समर्थन करते हुए इग्नोज गोल्ड जहर कहते हैं कि इस्लामिक तसव्वुफ में जो सन्तोष, त्याग, वैराग्य और फकीरी के गुण पाये जाते हैं, वे ईसाई धर्म की देन हैं [14]।

कुरान की कुछ प्रारम्भिक सूराओं में तापसी जीवन और आत्म–संयम पर जो बल दिया गया है, वह ईसाइयत में भी विद्यमान है जिसके आधार पर कहा जा सकताा है कि ईश्वर धर्म और इस्लाम धर्म की मान्यताओं में समानता पाई जाती है । इस्लाम धर्म के पूर्व ईश्व ज्ञान संबंधी जिन विचारों को इस्लामियों ने माना है वही यहूदी धर्म और ईसाई धर्म में भी पाये जाते हैं । यहूदी दार्शनिकों ने पहली शताब्दी हिजरी में जिन बातो को अपनी धार्मिक पुस्तक 'तौरेत' में सिद्ध किया है उन्हीं बातों को उसके पश्चात् सूफियों ने अपनी कुरान में सिद्ध किया ।

4. **सूफीमत की उत्पत्ति स्वतः हुई :–** जहां विद्वानों ने सूफीमत की उत्पत्ति कुरान, ईसाइयत तथा नव–अफलातूनी विचारधारा से मानते हैं वहीं कुछ विद्वानों का कहना है कि इसकी उत्पत्ति स्वतः हो गई । इस सिद्धान्त के मानने वालों में विल्बस फोर्स, क्लार्क तथा जुईस इग्नोज के नाम विशेष से उल्लेखनीय हैं । इन विद्वानों का मानना है कि प्रत्येक धर्म में एक ऐसा समय आ जाता है जब उसके अनुयायी ईश्वर प्रेम और ईश्वर ज्ञान की ओर स्वतः अग्रसर होते हैं । इसी प्रकार सूफीमत के विचार बिना किसी बाह्य और आन्तरिक कारणों के अपने आप अस्तित्व में आये और धीर–धीरे विकसित हुए ।
5. **सूफीमत की उत्पत्ति का स्रोत बौद्ध धर्म :–**कुछ विद्वानों ने सूफीमत का आधार बौद्ध धर्म को भी माना है । जिस प्रकार बौद्ध धर्म में प्रत्येक सम्प्रदाय और जाति के व्यक्ति को शरण मिल सकती थी उसी प्रकार सूफीमत में भी प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय और जाति का व्यक्ति स्थान प्राप्त कर सकता है [15]। बौद्ध धर्म का सार तत्व जीवन के आवागमन से मुक्त होना है । बौद्ध धर्म का चरम लक्ष्य जीवन में मोक्ष को प्राप्त करना है जबकि सूफीमत का चरम लक्ष्य 'फना' को प्राप्त करना है । सूफी परमात्मा को ही सत्य मान उसी में विलीन हो जाते हैं । भावी जीवन के प्रति सूफियों की अनाशक्ति की भावना बौद्ध धर्म दर्शन का ही प्रभाव है । सूफियों का 'फना' हो या बौद्ध धर्म का निर्वाण दोनों का लक्ष्य मोक्ष अर्थात् ब्रह्म को प्राप्त करना है । बौद्ध धर्म का ध्यान और सूफियों की साधना में समाधि का महत्तव एक ही रूप में व्यवहृत है । निकोल्सन ने नव–अफलातूनी दर्शन के साथ–साथ सूफीमत को बौद्ध धर्म की विचारधाराओं से भी प्रभावित माना है । नव–अफलातूनी दर्शन के साथ बौद्ध धर्म और भारतीय विचारधाराओं ने भी सूफीमत के विकास में योगदान दिया है ।

वानक्रेमर ने सूफीमत पर दो प्रत्यक्ष प्रभावों को स्वीकार किया है–ईसाई साधकों का तापस जीवन और बाद में चलकर बौद्धों की चिन्तनधारा । बौद्ध तत्व चिन्ता के द्वारा इस्लाम की रहस्यवादी प्रवृति में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, वानक्रेमर ने उन्हें ही असली सूफीमत माना है [16]।

बौद्ध धर्म से ही सूफियों ने संसार त्याग और वैराग्य को अपनाया । सूफियों ने बौद्धों की तरह भिक्षु मठों और विहारों के समान जीवन बिताने के लिए खानकाहों को चुना । जिस काल में सूफीमत को

मत के रूप में ग्रहण करने की बात स्वीकार की जा रही थी उससे पहले ही भारत का संबंध अरब के साथ था । उस समय राजनीतिक और व्यापारिक संबंधों के साथ वे यहां के रहन–सहन, धर्म, साधना–पद्धति आदि के सम्पर्क में आये । अब तक वे यहां के बौद्ध सन्यासियों, तांत्रिकों, सिद्ध पीठों से परिचित हो चुके थे । सिन्ध में भी बौद्ध धर्म का प्रचार हो चुका था ।

मुस्लिम देश बौद्धों के आचार–विचार, पूजा–पद्धति, मन्दिर–मूर्तियों आदि से इतना प्रभावित हुआ कि बौद्ध धर्म और बौद्ध भिक्षुओं का प्रभाव उन पर पडे बिना नहीं रह सका । ऐसा माना जाता है कि सूफी साधक ने माला फेरने का व्यवहार इन बौद्ध भिक्षुओं से ही ग्रहण किया है । सूफियों ने बौद्ध दर्शन से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कुछ न कुछ अवश्य ग्रहण किया है ।

मौलाना जामी ने सूफी सिद्धान्त पर लिखी रचना –नफहातुल उन्स' में हातम असम की एक उक्ति का उल्लेख किया है कि सूफी को चार प्रकार की मौत मर जाना चाहिए–प्रथम मौते अवभज अर्थात् भूखे रहकर दूसरी 'मौते असवद' अर्थात् दूसरों के कष्ट देने पर शांतिपूर्वक उसे सहन करना, तीसरी 'मौते अरवजर' अर्थात् दूसरों के फटे टुकडे सीना और उसे धारण करना उपर्युक्त सभी उपदेश व शिक्षाएं बौद्ध धर्म में मौजूद हैं ।

संदर्भ सूची

1. इश्क की खुशबू है सूफी–शशिकान्त 'सदैव' पृ0–9
2. दि डाविन्ट्रास ऑफ सूफीज्म–जान आर0 बेरी, पृ0–10
3. करूफुल : महजूब पृ0–34
4. सूफीज्म पृ0–78
5. मध्ययुगीनन सूफी और सन्त साहित्य–डॉ0 मुक्तेश्वर तिवारी, पृ0–48
6. हिन्दी साहित्य :युग और प्रवृतियां–डॉ0 शिवकुमार शर्मा, पृ0–153
7. मौ0 इरशाद अली : सूफीमत अथवा मुहम्मदन की मस्टीसिज्म मार्डन रिव्यू नवम्बर 1610
8. सर विलियम जोन्स–डिक्शनरी ऑफ इस्लाम, पृ0–423
9. तसव्वुफ अथवा सूफीमत प्रथम संस्करण चन्द्रबूली पाण्डेय, पृ0–10
10. तसव्वुफ अथवा सूफीमत प्रथम संस्करण चन्द्रबूली पाण्डेय, पृ0–14
11. तसव्वुफ अथवा सूफीमत प्रथम संस्करण चन्द्रबूली पाण्डेय, पृ0–3
12. मध्ययुगीन सूफीमत सन्त साहित्य–मुक्तेश्वर तिवारी, पृ0–49
13. भारतीय इतिहास और साहित्य में सूफीदर्शन–हरदेव सिंह, पृ0–26
14. भारतीय इतिहास और साहित्य में सूफीदर्शन–हरदेव सिंह, पृ0–26
15. भारतीय इतिहास और साहित्य में सूफीदर्शन–हरदेव सिंह, पृ0–29
16. सूफीमत साधना और साहित्य–रामपूजन तिवारी, पृ0–185